जिन्हो घर झुमते हाथी

जिन्हो घर झुमते हाथी , हजारों लाखों थे साथी
उन्हीं को खा गई माटी , तु खुशकर नींद क्यों सोया

नकारा कुचका बाजै , कि मारु मौत का बाजै
ज्यों सावन मेघला गाजै
तु खुशकर ...

जिन्हो घर लाल और हीरे , सदा मुख पान के बीड़े
उन्हीं को खा गए कीड़े
तु खुशकर ...

जिन्हों घर पालकी घोड़े , जरी जखफ्त के जोड़े ,
वहीं अब मौत ने तोड़े
तु खुशकर ...

जिन्हों संग नेह था तेरा , किया उन खाक में डेरा,
न फिर करने गये फेरा
तु खुशकर...

Source: https://www.bharattemples.com/jihnho-ghar-jhumte-hathi/

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw